जीवेम शरदः शतम

कहते जिसे हम भाग्य हैं, वह पूर्वकृत पुरुषार्थ है।

यह मनुज जीवन जो मिला, वह वस्तुतः कर्मार्थ है।

सब मानवेतर योनियां विरचित, यहां भोगार्थ हैं।

उपदिष्ट गीता में महत्तर, कर्म का तत्वार्थ है।

जो बीज बोते भूमि में, सद्यः फलित होता नहीं।

कृतयत्न फल के मध्य अंतर काल का खोता नहीं।

फलवान जो होने लगे कृतकर्म ही प्रारब्ध है।

नर को नियति निर्माण का अधिकार बस उपलब्ध है।

कोई नहीं सुख दुःख प्रदाता, कर्म के अतिरिक्त है।

दुःख स्त्रोत पर को मानना, अज्ञान की अभिव्यक्ति है।

कोई नहीं जो भोग सकता, फल इतरकृत कर्म का।

फल कर्म कर्ता मध्य दृढ़ संबंध कारण धर्म का।

जब सत्य यह है तो सिवा इस आत्म के कल्याण के।

कुछ भिन्न करके क्यों बनें घातक स्वयं ही प्राण के।

जब दुःख जलनिधि संतरण क्षमता प्रबल युग बाहु में।

तब ढूंढ़ना क्या शांति को, शनि और मंगल राहु में।

जब विहित कर्माचरण से मन सत्व से परिपूर्ण हो।

निष्कामता आभरण सी उतरे, जगदभय चूर्ण हो।

"जीवेम शरदः शतम" का तब तक यहां अभिप्राय है।

सत्कर्मकृत जीता यहां, निष्क्रिय सदा मृतप्राय है।

अज्ञान वारण का निवारण कठिन पर संभाव्य है।

सत्कर्म तरिणी से त्वरित संसार अर्णव नाव्य है।

"होंगे विमलक्रिय" और सब दुख द्वंद्व का कारण हरें।

आओ यही संकल्प शुभ नव वर्ष में धारण करें।

- शिवकुमार मिश्र

29/12/2017

भोपाल